"स्नातक स्तर के अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन"

सन्तोष डबराल*
शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र)
हिमगिरी जी विश्वविद्यालय, देहरादून

प्रस्तावना

प्राचीन काल में शिक्षा को न तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची माना गया और न ही जीवकोपार्जन का साधन। इसके विपरीत शिक्षा को वह प्रकाश माना गया, जो व्यक्ति को अपने सर्वतोमुखी विकास करने, उत्तम जीवन व्यतीत करने और मोक्ष प्राप्त करने में सहायता देती है। दूसरे शब्दो में शिक्षा को जीवन के विभिन्न क्षेत्रो में व्यक्ति का पथ प्रदर्शित करने वाला प्रकाश माना गया है।

असतो मा गमय तमसो मा ज्योर्तिगमय

प्राचीन काल में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। इसका एक प्रभाव यह है कि शिक्षा को प्रकाश का एक स्रोत, अन्तर्दृष्टि, अन्तर्ज्याति ज्ञान, चक्षु और मनुष्य का तृतीय नेत्र माना जाता था। ''ज्ञान मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम'' इस युग में भारतीयों को यह विश्वास था कि शिक्षा का प्रकाश व्यक्ति के सब संशयो का उन्मूलन और उसकी सब बाधाओं का निवारण करता है। शिक्षा से प्राप्त अन्तर्दृष्टि व्यक्ति की बुद्धि विवेक और कुशलता में वृद्धि करती है। शिक्षा व्यक्ति को वास्तविक शक्ति से सम्पन्न करती है। उसके सुख–सुयश और समृद्धि में योग देती है। उसको जीवन के यथार्थ के महत्व को समझने में क्षमता प्रदान करती है और उसे भवसागर से पार कराकर मोक्ष प्राप्ति में सहायता प्रदान करती है।

अध्ययन के उद्देश्य: वास्तव में शिक्षा के उद्देश्य वे पथ–दिग्दर्शक दीपक है, जो शिक्षा प्रक्रिया में संलग्न व्यक्तियों को उचित मार्ग दिखाते है। इन्हे दो भागों में बॉट सकते हैं–

1. सामान्य उद्देश्य
2. विशिष्ट उद्देश्य

सामान्य उद्देश्य

जिन उद्देश्यो को हम एक निश्चित अवधि के अंतर्गत प्राप्त करने का लक्ष्य बनाते है, उन्हें सामान्य उद्देश्य कहा जा सकता है।

विशिष्ट उद्देश्य

जिन उद्देश्यों को हम एक निश्चित अवधि के अंतर्गत प्राप्त करने का लक्ष्य बनाते है। उन लक्ष्यो को प्राप्त करने के लिए दिन–प्रतिदिन की क्रिया करके जो लक्ष्य पाने का प्रयास करते है उन्हें विशिष्ट उद्देश्य कहा जा सकता है। शोधकर्ता ने अपने अनुसंधान के कार्य के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये है –

1. स्नातक स्तर के अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर के अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं में अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनायें :

परिकल्पना का अर्थ है–पूर्व चिंतन। यह अनुसंधान की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। इसका तात्पर्य यह है कि किसी समस्या के विश्लेषण व परिभाषीकरण के पश्चात इसमें कार्य और कारण के सम्बन्धो का पूर्व चिंतन कर लिया गया है। अर्थात् समस्या का यह कारण हो सकता है, यह निश्चित करने के पश्चात उसका परीक्षण कार्य प्रारम्भ हो जाता है। बेकन का विचार था कि ज्यों ही समस्या की जानकारी हो जाती है उसके लिए परिकल्पना का निर्माण हो जाता है। अनुसंधान कार्य इस परिकल्पना के निर्माण और उसके बीच के परीक्षण की प्रक्रिया है।

1. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर है।
2. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर होता है।
3. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर होता है।
4. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।
5. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर होता है।
6. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर होता है।
7. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में अन्तर है।

8. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में अन्तर होता है।

9. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अभिप्रेरणा में अन्तर होता है।

सीमांकन

1. अध्ययन के अन्तर्गत उत्तराखण्ड राज्य के हेमवती नन्दन बहुगुणा केन्द्रीय गढ़वाल विश्वविद्यालय,श्रीनगर से सम्बद्ध आने वाले महाविद्यालयों को शामिल किया गया है।
2. अध्ययन में हेमवती नन्दन बहुगुणा केन्द्रीय गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर से सम्बद्ध, आने वाले सहशिक्षा एंव महिला शिक्षा व ग्रामीण एंव शहरी दोनों क्षेत्रों के महाविद्यालयों की छात्राओं को शामिल किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य को पूरा करने हेतु हेमवती नन्दन बहुगुणा केन्द्रीय गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर से सम्बद्ध महाविद्यालयों मे से ग्रामीण क्षेत्र के सहशिक्षा महाविद्यालय के 7 महाविद्यालयों से 120 छात्राएँ अनुसूचित की और 120 छात्राएँ अन्य पिछड़ा वर्ग की तथा शहरी क्षेत्र के सह–शिक्षा महाविद्यालयो मे से 7 महाविद्यालयों से 120छात्राएँ अनुसूचित जाति तथा 120 छात्राएँ अन्य पिछड़ा वर्ग की साथ ही कन्या महाविद्यालयों मे से 4 महाविद्यालय से 60 अनुसूचित जाति की एवं 60 अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं को न्यादर्श में शामिल किया गया है। इस प्रकार पूरे न्यादर्श मे 300 छात्राओं को न्यादर्श में शामिल किया गया है जो 18 महाविद्यालयों से चयनित की गयी है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं संगठन:

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता द्वारा संकलित आंकड़ो की व्याख्या करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की अन्तर विधि इत्यादि सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग करके परिणाम ज्ञात करते हुए उनकी विवेचना की गयी है।

तालिका नं०–1

स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर की तुलना –

शून्य परिकल्पना

स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नही है।

छात्रायें	न्यादर्श	माध्य	मनक विचलन	क्रान्तिकअनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीणअनुसूचित जाति	120	33.90	10.98	1.2186	असार्थक''
शहरी अनुसूचित जाति	120	32.18	10.95		

स्वतन्त्रता का अंश(d.f.) =238

क्रान्तिक अनुपात तालिका का मान–.05 स्तर = 1.97 .01 स्तर = 2.59

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.1.4 से ज्ञात होता है कि परिकलित क्रान्तिक अनुपात मान (1. 2186),सार्थकता स्तर 0.05 पर दिये गये सारणी मान 1.97 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण अनुसूचित जातिएवं शहरी अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्य असार्थक अन्तर है। शैक्षिक आकांक्षा के सन्दर्भ में दोनों समूह के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात होता है, कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं का (33.90)काशहरी अनुसूचित जाति की छात्राओं (32.18)से मध्यमान अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं की अपेक्षाशहरी अनुसूचित जातिकी छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर निम्न है। शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों को आरेख संख्या 4 में दर्शाया गया है।

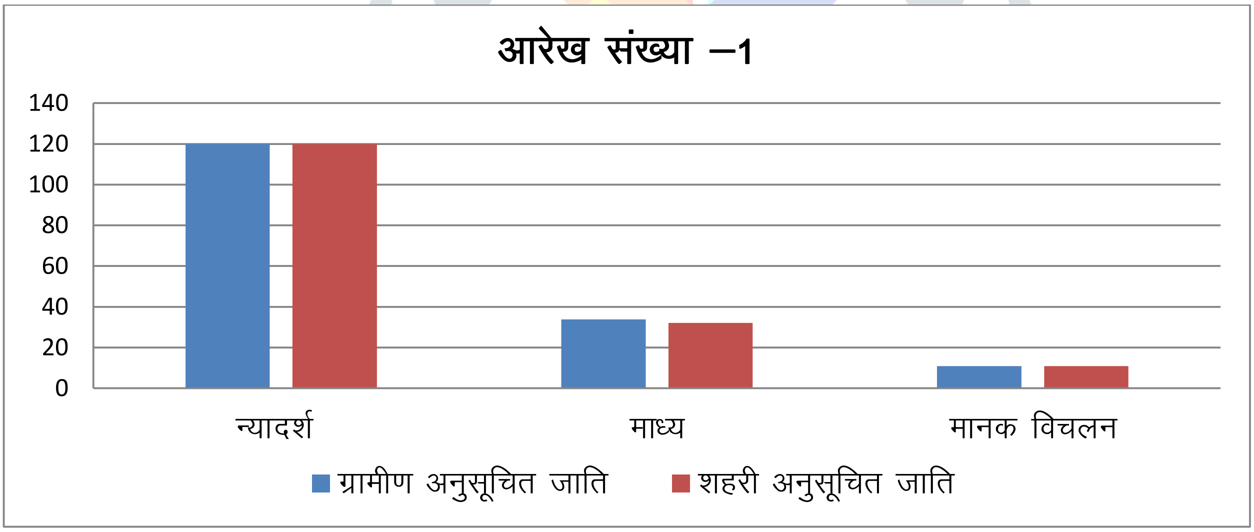

प्राप्त परिणाम के आधार पर शोध की परिकल्पना ग्रामीण क्षेत्र की अनुसुचित जाति एंव शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आंकाक्षा स्तर में अन्तर होता है।''अस्वीकृत'' होती है तथा शून्य परिकल्पना ''ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आंकाक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है''। ''स्वीकृत'' होती है।

तालिका नं०–2

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर की तुलना –

शून्य परिकल्पना

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नही होता है।

छात्रायें	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण अनुसूचित जाति	120	33.90	10.98	2.49	सार्थक"
कन्या महा० अनुसूचित जाति	60	37.95	8.72		

स्वतन्त्रता का अंश(d.f.) =178

क्रान्तिक अनुपात तालिका का मान–.05 स्तर = 1.97, .01 स्तर = 2.60

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.1.5 से ज्ञात होता है कि परिकलित क्रान्तिक अनुपात मान (2.49),सार्थकता स्तर 0.05 पर दिये गये सारणी मान 1.97 से अधिक है, एवं 0.01 पर दिये गये सारणी मान से कम है। जिससे स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण अनुसूचित जाति एवं कन्या महा०अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सार्थक अन्तर है। शैक्षिक आकांक्षा के सन्दर्भ में दोनों समूह के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात होता है, कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं का (33.90)का कन्या महा० अनुसूचित जाति की छात्राओं (37.95)से मध्यमान कम है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं की अपेक्षा कन्या महा०अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक है। शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों को आरेख संख्या 5 में दर्शाया गया है।

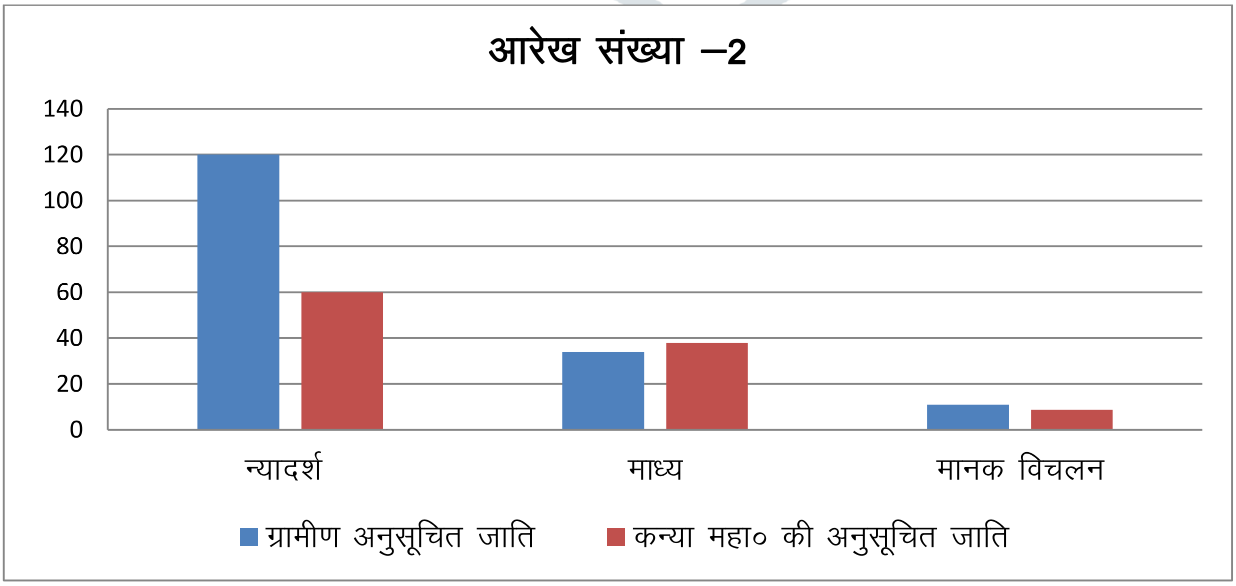

प्राप्त परिणाम के आधार पर शोध की परिकल्पना ''ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आंकाक्षा में अन्तर होता है।''स्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आंकाक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''अस्वीकृत होती है।

तालिका नं०–3

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर की तुलना –

शून्य परिकल्पना

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

छात्रायें	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीणअन्यपिछड़ा वर्ग	120	37.57	8.36	1.04	असार्थक''
शहरी अन्य पिछड़ा वर्ग	120	38.71	8.59		

स्वतन्त्रता का अंश(d.f.) =238

क्रान्तिक अनुपात तालिका का मान–.05 स्तर = 1.97 .01 स्तर = 2.59

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.1.6 से ज्ञात होता है कि परिकलित क्रान्तिक अनुपात मान(1.04) ,सार्थकता स्तर 0.05 पर दिये गये सारणी मान 1.97 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के मध्य असार्थक अन्तर है। शैक्षिक आकांक्षा के सन्दर्भ में दोनों समूह के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात होता है, कि ग्रामीण अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं का (37.57)का शहरी अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं (38.71)से मध्यमान कम है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण अन्य पिछड़ा वर्गकी छात्राओं की अपेक्षा शहरी अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर अधिक है। शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों को आरेख संख्या 6 में दर्शाया गया है।

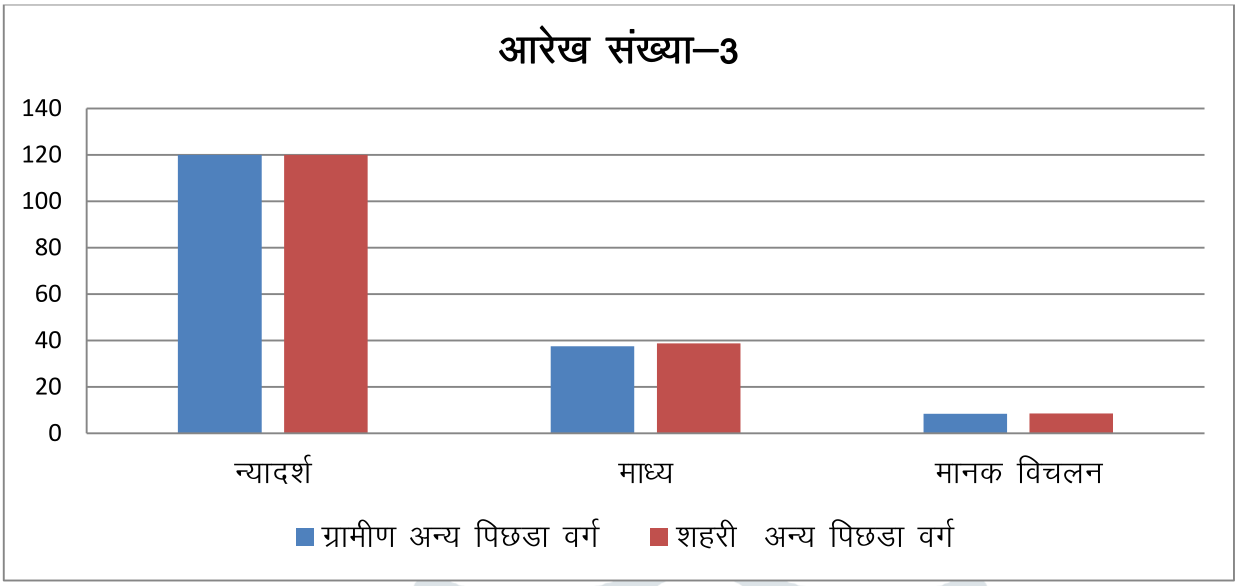

प्राप्त परिणाम के आधार पर शोध की परिकल्पना ''ग्रामीण क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर होता है।''अस्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना ''ग्रामीण क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''स्वीकृत होती है।

तालिका नं०–4

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना –

शून्य परिकल्पना

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही होता है।

छात्रायें	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीणअनुसूचित जाति	120	279.85	38.01	1.70	**असार्थक''**
शहरी अनुसूचित जाति	120	288.69	42.24		

स्वतन्त्रता का अंश(d.f.) =238

क्रान्तिक अनुपात तालिका का मान–.05 स्तर = 1.97 .01 स्तर = 2.59

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.2.4 से ज्ञात होता है कि परिकलित क्रान्तिक अनुपात मान (1.70),सार्थकता स्तर 0.05 पर दिये गये सारणी मान 1.97 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण अनुसूचित जातिएवं

शहरी अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है। शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में दोनों समूह के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात होता है,कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं का (279. 85)काशहरी अनुसूचित जाति की छात्राओं (288.69)से मध्यमान कम है । अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं की अपेक्षाशहरी अनुसूचित जातिकी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर निम्न है। शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों को आरेख संख्या 18 में दर्शाया गया है।

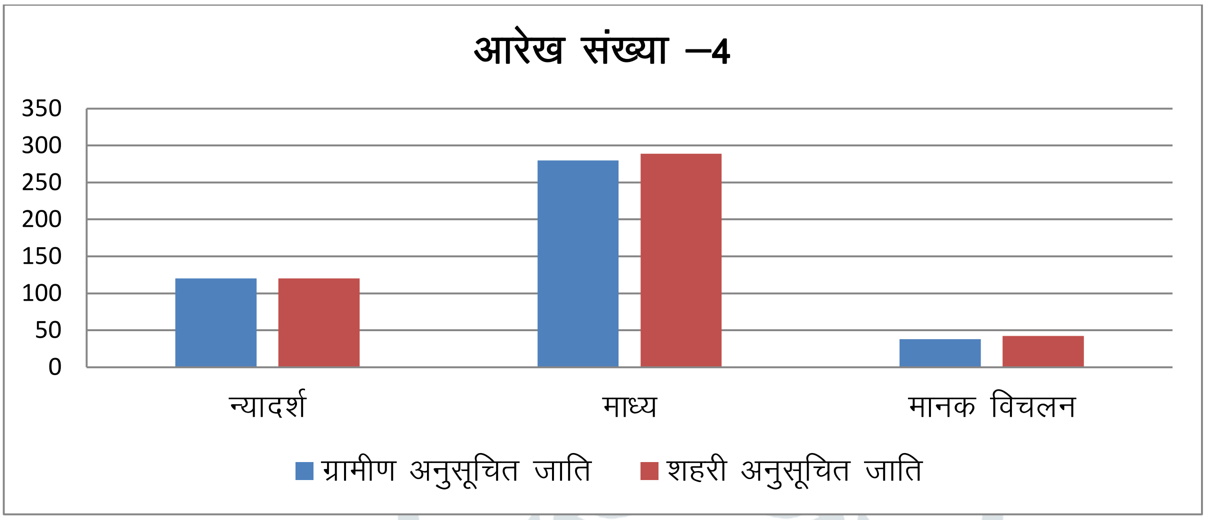

प्राप्त परिणाम के आधार पर शोध की परिकल्पना ग्रामीण क्षेत्र की अनुसुचित जाति एंव शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में अन्तर होता है।'' अस्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना ''ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकृत होती है।

तालिका नं०–5

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना –

शून्य परिकल्पना

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।

छात्रायें	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण अनुसूचित जाति	120	279.85	38.01	2.79	**सार्थक''**
कन्या महा० की अनुसूचित जाति	60	297.78	45.33		

स्वतन्त्रता का अंश(d.f.) =178

क्रान्तिक अनुपात तालिका का मान–.05 स्तर = 1.97, .01 स्तर = 2.60

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.2.5 से ज्ञात होता है कि परिकलित क्रान्तिक अनुपात मान (2.79) ,सार्थकता स्तर 0.05 पर दिये गये सारणी मान 1.97 से अधिक है, जिससे स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण अनुसूचित जाति एवं कन्या महा०अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है। शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में दोनों समूह के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात होता है, कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं का (279.85)का कन्या महा० अनुसूचित जाति की छात्राओं (297.78)से मध्यमान कम है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं की अपेक्षा कन्या महा०अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर अधिक है। शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों को आरेख संख्या 19 में दर्शाया गया है।

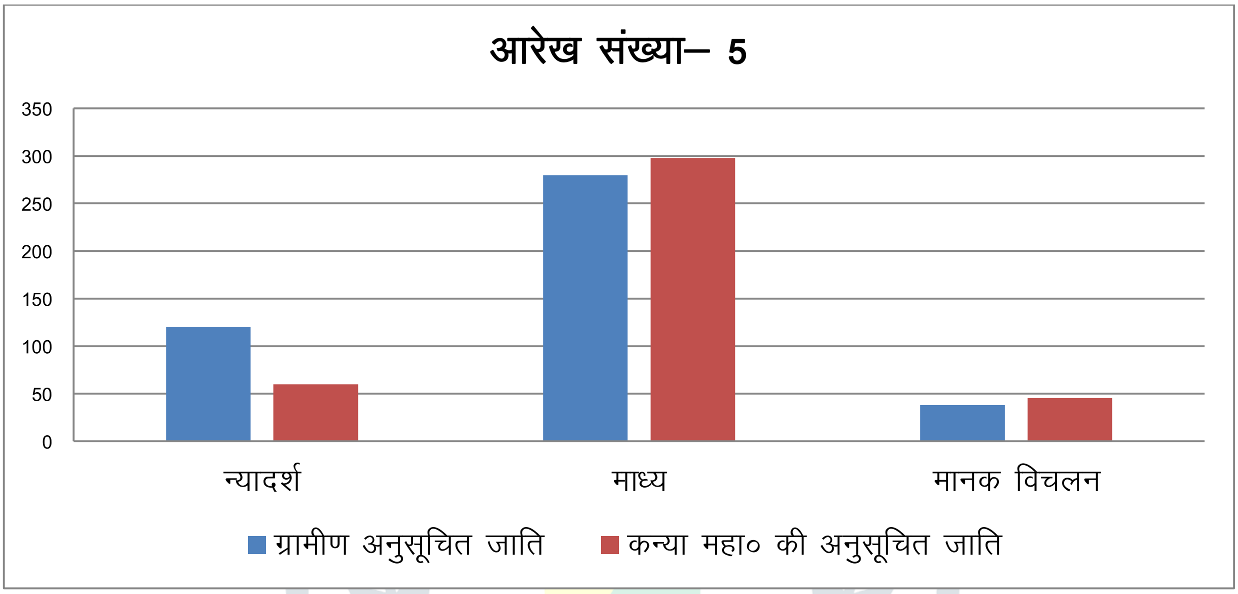

प्राप्त परिणाम के आधार पर शोध की परिकल्पना "ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर होता है।" स्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धिस्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अस्वीकृत होती है।

तालिका नं०–6

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना –

शून्य परिकल्पना

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एव शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही होता है।

छात्रायें	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर

ग्रामीण अन्य पिछड़ा वर्ग	120	302.83	46.71	1.677	असार्थक''
शहरी अन्य पिछड़ा वर्ग	120	313.22	49.16		

स्वतन्त्रता का अंश(d.f.) =238

क्रान्तिक अनुपात तालिका का मान–.05 स्तर = 1.97 .01 स्तर = 2.59

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.2.6 से ज्ञात होता है कि परिकलित क्रान्तिक अनुपात मान (1.677),सार्थकता स्तर 0.05 पर दिये गये सारणी मान 1.97 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तरनहीं है। शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में दोनों समूह के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात होता है, कि ग्रामीण अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं का (302.83)का शहरी अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं (313.22)से मध्यमान कम है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा शहरी अन्य पिछड़ा वर्गकी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर अधिक है। शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों को आरेख संख्या 20 में दर्शाया गया है।

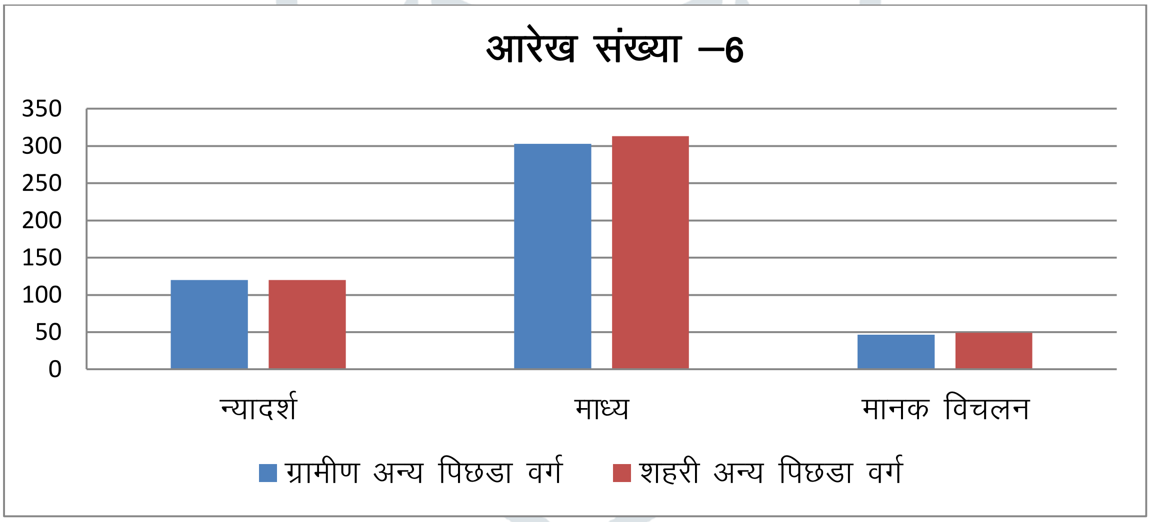

प्राप्त परिणाम के आधार पर शोध की परिकल्पना ''ग्रामीण क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धिस्तर में अन्तर होता है।'' अस्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना'' ग्रामीण क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकृत होती है।

तालिका नं०–7

स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा की तुलना –

शून्य परिकल्पना

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नही होता है।

छात्रायें	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण अनुसूचित जाति	120	28.93	5.50	0.161	**असार्थक''**
शहरी अनुसूचित जाति	120	28.82	4.88		

स्वतन्त्रता का अंश(d.f.) =238

क्रान्तिक अनुपात तालिका का मान–.05 स्तर = 1.97 .01 स्तर = 2.59

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.3.4 से ज्ञात होता है कि परिकलित क्रान्तिक अनुपात मान (0.161),सार्थकता स्तर 0.05 पर दिये गये सारणी मान 1.97 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण अनुसूचित जातिएवं शहरी अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में दोनों समूह के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात होता है, कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं का (28.93)का शहरी अनुसूचित जाति की छात्राओं (28.82)से मध्यमान अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं की अपेक्षा शहरी अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा निम्न है। अभिप्रेरणा के मध्यमानों को आरेख संख्या 32 में दर्शाया गया है।

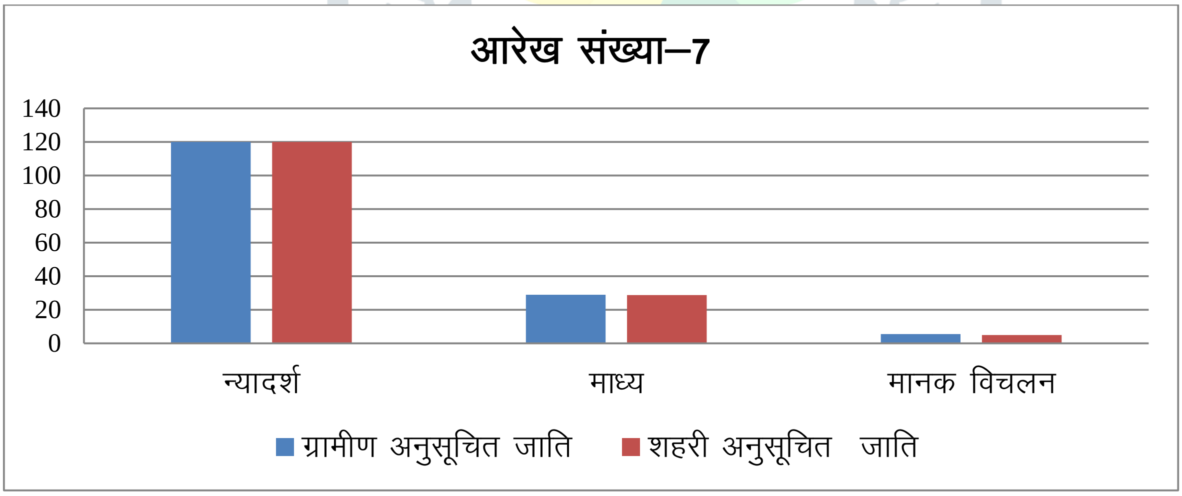

प्राप्त परिणाम के आधार पर शोध की परिकल्पना ''ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में अन्तर होता है।'' अस्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना ''ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति तथा शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा से सार्थक अन्तर नही होता है।'' स्वीकृत होती है।

तालिका नं०–8

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेणा की तुलना –

शून्य परिकल्पना

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालय की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नही होता है।

छात्रायें	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीण अनुसूचित जाति	120	28.93	5.50	2.83	**सार्थक"**
कन्या महा० की अनुसूचित जाति	60	26.30	6.53		

स्वतन्त्रता का अंश(d.f.) =178

क्रान्तिक अनुपात तालिका का मान–.05 स्तर = 1.97, .01 स्तर = 2.60

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.3.5 से ज्ञात होता है कि परिकलित क्रान्तिक अनुपात मान (2.83),सार्थकता स्तर 0.05 पर दिये गये सारणी मान 1.97 से अधिक है, जिससे स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण अनुसूचित जाति एवं कन्या महा०अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर होता है। अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में दोनों समूह के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात होता है, कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं का (28.93)का कन्या महा० अनुसूचित जाति की छात्राओं (26.30)से मध्यमान अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण अनुसूचित जाति की छात्राओं की अपेक्षा कन्या महा०अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा कम है। अभिप्रेरणा के मध्यमानों को आरेख संख्या 33 में दर्शाया गया है।

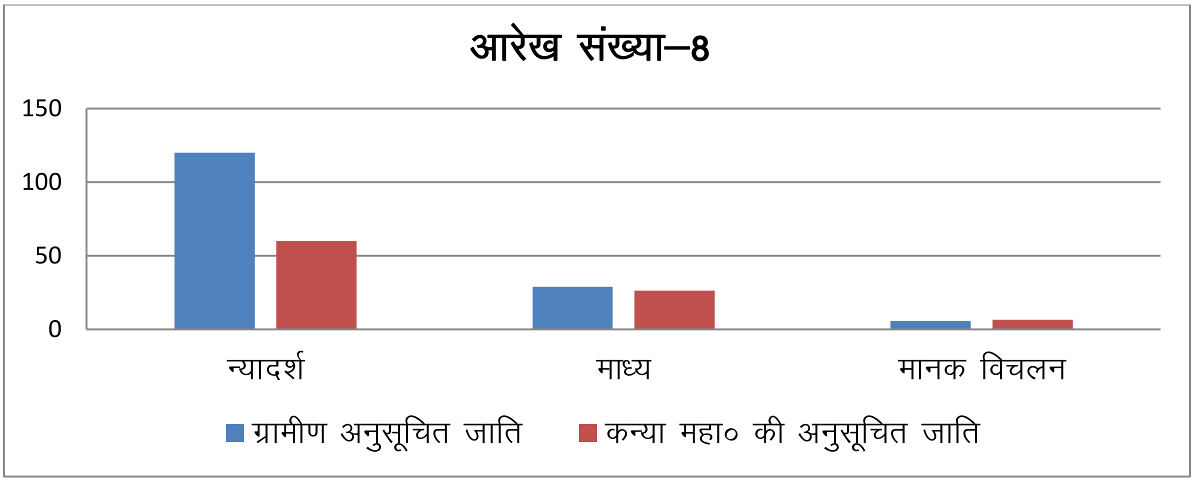

प्राप्त परिणाम के आधार पर शोध की परिकल्पना ''ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में अन्तर होता है।'' स्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना'' ग्रामीणक्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं होता है। ''अस्वीकृत होती है।

तालिका नं०–9

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अभिप्रेरणा की तुलना –

शून्य परिकल्पना

स्नातक स्तर की ग्रामीणक्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नही होता है।

छात्रायें	न्यादर्श	माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
ग्रामीणअन्य पिछड़ा वर्ग	120	28.51	5.87	.748	**असार्थक''**
शहरीअन्य पिछड़ा वर्ग	120	27.94	5.86		

स्वतन्त्रता का अंश(d.f.) =238

क्रान्तिक अनुपात तालिका का मान–.05 स्तर = 1.97 .01 स्तर = 2.59

उपर्युक्त तालिका संख्या 4.3.6 से ज्ञात होता है कि परिकलित क्रान्तिक अनुपात मान (.748) ,सार्थकता स्तर 0. 05 पर दिये गये सारणी मान 1.97 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर ग्रामीण अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तरनहीं है। अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में दोनों समूह के मध्यमानों की तुलना करने पर ज्ञात होता है, कि ग्रामीण अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं का (28.51)का शहरी अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं (27.94)से मध्यमान अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा शहरी अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अभिप्रेरणा स्तर कम है। अभिप्रेरणा के मध्यमानों को आरेख संख्या 34 में दर्शाया गया है।

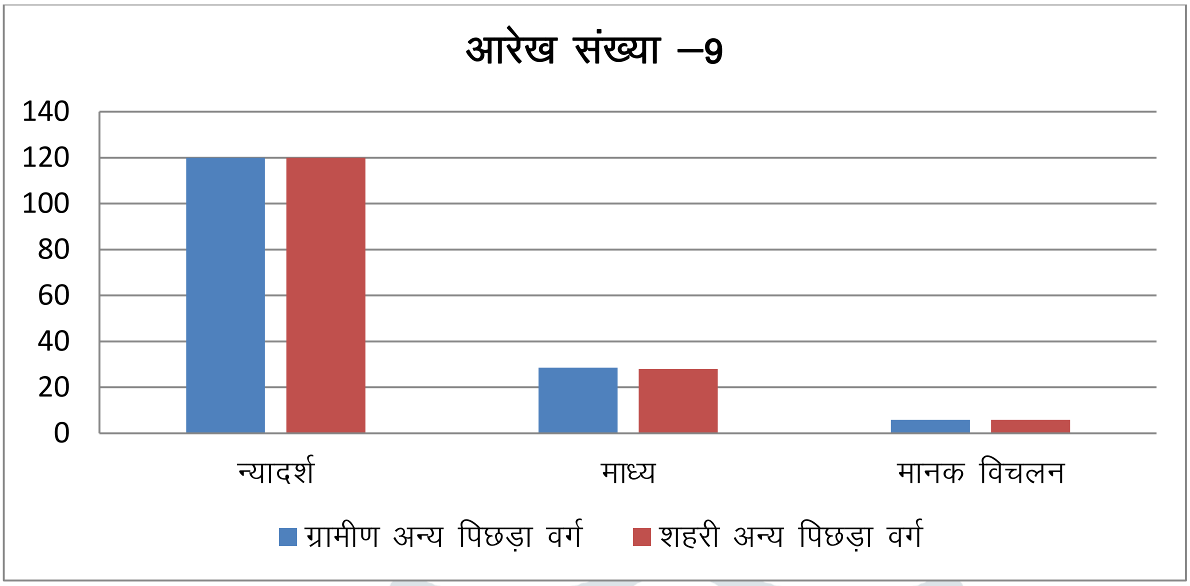

प्राप्त परि.ाम के आधार पर शोध की परिकल्पना'' ग्रामीणक्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग तथा शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अभिप्रेरणा में अन्तर होता है।'' अस्वीकृत होती है तथा शून्य परिकल्पना ''ग्रामीणक्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग तथा शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष एवं व्याख्या

1. स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नही होता है।

व्याख्या

आकांक्षा प्रत्येक व्यक्ति की जन्मजात शक्ति होती है। चाहे वह शिक्षा के प्रति,या किसी भी अमूल्य वस्तु को पाने की, शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें सभी वर्ग शामिल होना चाहते है क्योंकि वे समाज एवं अपने लिए कुछ करना चाहते हैं। फिर चाहे ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले हो या शहरी क्षेत्र में रहने वाले सभी शिक्षा की आकांक्षा रखते है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर न होना सही प्रतीत होता है।

2. स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनूसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर होता है।

व्याख्या

ग्रामीण क्षेत्र एवं कन्या महाविद्यालयों की छात्राओं की पारिवारिक वातावरण में बहुत अन्तर होता है। एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक प्रक्रिया की व्यवस्था कन्या महाविद्यालयों की छात्राओं की अपेक्षा बेहतर नहीं होती है, क्योंकि कन्या महाविद्यालय शहरी एवं ग्रामीण दोनों परिवेश में पाये जाते हैं, क्योंकि इन महाविद्यालयों का वातावरण सह–शिक्षा महाविद्यालयों की अपेक्षा भिन्न होता है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर पाया जाना सही प्रतीत होता है।

3. स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

व्याख्या

शिक्षा एक सतत् एवं निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसका लाभ सभी वर्ग के बच्चे लेना चाहते हैं। फिर वह चाहे ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में पढ़ने वाली छात्रा हों यह सभी पर यह लागू होता है कि वे पूर्णतः उच्चशिक्षा को प्राप्त करना चाहते हैं। किसी भी जाति की छात्रायें चाहे ग्रामीण परिवेश में शिक्षा ग्रहण कर रही हो या शहरी परिवेश में, शिक्षा की आकांक्षा स्तर सभी में रहती हैं। इसलिए ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर न पाया जाना सही प्रतीत होता है।

1. स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही होता है।

व्याख्या

शैक्षिक उपलब्धि ही आर्थिक उपलब्धि का निर्धारण करती है जिस प्रकार समाज में शैक्षक विभिन्नताओं का प्रमाण मिलता है तो आर्थिक आधार पर वे सभी विभिन्नता समाप्त हो जाती हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति यह मानता है कि शैक्षिक उपलब्धि ही आर्थिक उपलब्धि का आधार है और आर्थिक उपलब्धि लगभग आज सभी क्षेत्रों में उपलब्धि प्रदान करती है। इसीलिए वे भी अपने उपलब्ध साधनों के आधाार पर शहरी क्षेत्र की छात्राओं के बराबर शैक्षिक उपलब्धि को बनाये रखने का प्रयास करती है। इसीलिए ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर न पाया जाना सही प्रतीत होता है।

2. स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनूसूचित जाति की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होता है।

व्याख्या

कन्या महाविद्यालय ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में स्थापित होते हैं तथा ग्रामीण क्षेत्र के सह–शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर इसलिए पाया जाता है कि वहां छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि स्तर एवं आकांक्षाऐं कन्या महाविद्यालयों के छात्राओं से निम्न पाया जाता है। इसलिए सार्थक अन्तर प्रतीत होता है ।

3. स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही होता है।

व्याख्या

शैक्षिक उपलब्धि के महत्व को अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राऐं, ग्रामीण क्षेत्र या शहरी क्षेत्र की हों अच्छी तरह समझती है। यह बात सभी वर्ग की छात्राओं पर भी लागू होती है। अतः महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर न पाया जाना सही प्रतीत होता है।

4. स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं शहरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

व्याख्या

अभिप्रेरणा प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार को प्रदर्शित करती है। चाहे वह शिक्षा के प्रति,या किसी भी अमूल्य वस्तु को पाने की, शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें सभी वर्ग शामिल होना चाहते है क्योंकि वे समाज एवं अपने लिए कुछ करना चाहते हैं। समान सोच, समान महाविद्यालय एवं समान शिक्षा व्यवस्था के कारण दोनों क्षेत्रों की जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर न पाया जाना स्वाभाविक प्रतीत होता है।

5. स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति एवं कन्या महाविद्यालयों की अनुसूचित जाति की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर होता है।

व्याख्या

कन्या महाविद्यालय ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में स्थापित होते हैं तथा ग्रामीण क्षेत्र के सह–शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर इसलिए पाया जाता है कि वहां छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि स्तर एवं आकांक्षाऐं कन्या महाविद्यालयों के छात्राओं से निम्न पाया जाता है। इसलिए सार्थक अन्तर प्रतीत होता है ।

6. स्नातक स्तर की ग्रामीण क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग एवं शहरी क्षेत्र की अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्राओं की अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

व्याख्या

ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाली अन्य पिछड़ा वर्गकी छात्राओं के अभिभावकों का शैक्षिक स्तर शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं के अभिभावकों की अपेक्षा काफी कम होता है। साथ ही दोनों क्षेत्रों में भौतिक सुविधाओं में भी काफी अन्तर होता है। अभिप्रेरणाा की प्राप्ति शहरी क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं को कम ही प्राप्त हो पाती है। जिससे यह प्रतीत होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं में सार्थक अन्तर पाया जाना सही प्रतीत होता है।

सुझावः

अनुसूचित जाति के लोग जीवन यापन के लिए अपने कार्य के साथ साथ दूसरों का भी कार्य करते हैं जिसमें घर के सभी सदस्य सहयोग करते हैं। अतः अध्ययन काल में इनका अध्ययन सुचारू रूप से नहीं चल पाता। समाज में आज भी अनुसूचित जातियों के द्वारा किये जाने वाले कार्यों को 'हम' की

दृष्टि से देखा जाता है। समाज की इसी धारणा के तहत अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रायें इनको अपने से अलग और भिन्न समझते हैं जिससे वे भावात्मक रूप से टूट जाते हैं। और समायोजन कठिन हो जाता है। अनुसूचित जातियों के अधिकांश परिवार अपनी दैनिक आवश्यकताओं की ही पूर्ति नहीं कर पाते है अतः शिक्षा की ओर उनका ध्यान दे पाना लगभग असम्भव ही है।

स्वतन्त्रता के पश्चात स्त्री को अपनी सही पहचान प्राप्त होनी शुरू हो गयी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सरकार तथा समाज सेवी संस्थायें स्त्री शिक्षा को लगातार बढ़ाने का प्रयास कर रही है ताकि वे स्वयं को उच्च करने वाले प्रेरको से अभिप्रेरित होकर अपनी शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा को उच्च रख सके ताकि हम एक स्वस्थ्य, समृद्ध भारत की कल्पना कर सके।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1-वर्मा प्राप्ति एवं श्रीवास्तव शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान 1996 विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

2- सुरेश भटनागर शिक्षा मनोविज्ञान, आर० लाल बुक डिपो मेरठ।

3- डॉ0 विवेक भार्गव– शैक्षिक मनोविज्ञान राखी प्रकाशन आगरा, पेज नृ0 183

4- डॉ0 गिरीश पचौरी, शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, आर०लाल० बुक डिपो, निकट गर्वनमेन्ञ इण्टर कालेज, मेरठ, पेज नं0 174

5- डा० गिरीश पचौरी, शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेन्ट इण्टर कालिज, मेरठ पेज नं० 174

18- डा० गिरीश पचौरी, शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेन्ट इण्टर कालिज, मेरठ पेज नं० 174

6- पारसनाथ, राय, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल, आगरा, 1993, पृष्ठ 96

7- पारसनाथ, राय, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल, आगरा, 1993, पृष्ठ 96

8-एडरेड़, डी० (1959) ने अपने शोध अध्ययन–''दा पर्सनल्टी कोरिलेट्स ऑफ एकेडमिक एचीवमेन्ट एण्ड मोटीवेशन''

9- वेदी,एच0 एस0,(1982),''एस्पीरेशन ऑफ एडोलसन टू सोशियो–इकोनामिक स्टेटस इनटेलीजेन्ट एण्ड सेक्स एम0बी0 बुच,सर्वे ऑफरिसर्च इन एजूकेशन.पृष्ठ–328